Hindi
Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी-अस्मिता की तलाश: 'गबन' और 'निर्मला' के संदर्भ में

•कुमारीसुकन्या• सोनल• अंजलीकुमारी
• शरणसहेली

Received : November 2011
Accepted : March 2012
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : *मुंशी प्रेमचंद को हिन्दी-साहित्य में उपन्यास - सम्राट् के रूप में जाना जाता है। उनका साहित्य उनके व्यक्तित्व से भी अधिक महान् है। कलम के इस सिपाही का जीवन उनके उपन्यासों के पात्रों की तरह ही संघर्षपूर्ण रहा। क्रांति के अग्रदूत प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी-जाति पर हो रहे अत्याचारों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है, जो समाज के कड़वे सच को दर्शाता है। हमने उनके उपन्यासों में 'गबन' और 'निर्मला' में नारी-अस्मिता की तलाश व प्रासंगिकता को लेकर परियोजना-कार्य तैयार किया है। इसमें विविध कॉलेजों की छात्राओं व गृहिणियों को लेकर प्रश्नावली तैयार की गयी है, जो प्रासंगिकता के स्तर को प्रदर्शित करती है। प्रोजेक्ट के रूप में हम कल और आज की नारी की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।*

संकेत शब्दः- *उपन्यास-सम्राट्, कलम का सिपाही, क्रांति के अग्रदूत, स्वप्न-द्रष्टा, युग स्रष्टा, नारी-अस्मिता, साहित्यिक अवदान, राष्ट्र-गौरव।*

कुमारी सुकन्या
बी०ए०-तृतीयवर्ष(2009–2012),हिन्दी(प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

सोनल
बी०ए०-तृतीयवर्ष(2009–2012),हिन्दी(प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अंजली कुमारी
बी०ए०-तृतीयवर्ष(2009–2012),हिन्दी(प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज, बेलीरोड,पटना– 800 001, बिहार,भारत
E-mail : sharansaheli@gmail.com

भूमिका:

''हममें से जिन्हें सर्वोत्तम शिक्षा और सर्वोत्तम मानसिक शक्ति मिली है, उन पर सबके प्रति उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी भी है।

हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।''

– प्रगतिशील लेखक संघ' के लखनऊ अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए प्रेमचंद का वक्तव्य (सन् 1936)

सत्य है, आज के इस अर्थ-प्रधान युग में साहित्य का विशेष ही महत्त्व है। मुंशी प्रेमचंद के अनुसार, ''साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा 'जीवन की आलोचना' है। चाहे वह निबंध के रूप में हो, कहानियों के या काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।''

(प्रेमचंद 2011, 06)

वास्तविकता भी यही है कि साहित्य ही वह दर्पण है जिसमेंहमसमाजकेतात्कालिकरूपवभविष्यमें
रूपांतरण की संभावना को देख पाते हैं। प्रेमचंद ने अपने समकालीन समाज की कुरूपताओं तथा विडंबनाओं को सशक्त रूप से चित्रित किया। नारी की समस्याओं तथा समाज की कुरीतियों के चित्रांकन को उन्होंने अपनी लेखनी का महत्वपूर्ण उद्देश्य बनाया। उनकी रचनाएँ नारी के अस्तित्व को दृढ़ करती हैं। दहेज-प्रथा, बेमेल विवाह, विधवा-जीवन के जिन कारूणिक चित्रों को उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा चित्रित किया, वे आज भी कैंसर की तरह समाज की जड़ों कोखोखलीकररहीहैं।उपन्यास-सम्राट्प्रेमचंदनेकथाव
उपन्यास-विधा को अद्भुत ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। आधुनिक काल में उन्होंने जिस तरह साहित्य को दशा-व-दिशा दी तथा नारी-उत्थान की जो अलख जगाई उससे संपूर्ण भारत में जागरण का शंख बज उठा।

साहित्यकार युग-द्रष्टा के साथ-साथ युग-स्रष्टा भी होता है। प्रेमचंद जी ने अपनी कृतियों में अपने युग की सामाजिक व मानवीय समस्याओं को रखा है। उनके अधिकांश उपन्यासों- 'गबन', 'निर्मला' जैसी कृतियों में नारी समस्या को केन्द्र में रखा गया है। ये समस्याएँ अपने युग में तो थीं ही, वर्त्तमान में भी विद्यमान हैं। प्रेमचंद की कृतियाँ आज भी समाज को दिशा-निर्देश देने में सक्षम हैं।

उपन्यास-सम्राट् प्रेमचंद ने जब लिखना प्रारंभ किया तब समाज व देश की अवस्था बहुत चिंतनीय थी। अशिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी, और परतंत्रता रूपी दीमक देश को खा रहे थे। अपनी रचनाओ में उन्होंने इन सभी विद्रूपताओं का सफलचित्रणकियाहै।आदर्शोन्मुखयथार्थवादकाकुशल
पुट उन्होंने अपनी कृतियों में डाला है। समस्या-चित्रण के साथ-साथ वे उसका समाधान भी सुझाते हैं। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज-सुधारक दृष्टिकोण प्रस्तुत कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। मुंशी प्रेमचंद के शब्दों में:-

''मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।''

(प्रेमचंद 2011, 35)

महान् लेखक मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कृतियों के माध्यम से नारी-मुक्ति का स्वर ऊँचा किया। बेमेल-विवाह, विधवा-जीवन, दहेज-प्रथा जैसी सड़ी-गली प्रथाओं व रीतियों पर उन्होंने जबरदस्त कुठाराघात किया। 'निर्मला', 'गबन' जैसी रचनाओं में नारी की पीड़ा का मार्मिक चित्रण है। 'निर्मला' की ट्रेजडी भारतीय नारी की ट्रेजडी को दिखलाती है। प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' (1923) में सारी पीड़ित नारियाँ अपने अस्तित्व रक्षा के लिए संघर्षरत दिखाई पड़ती हैं।

प्रेमचंद ने महसूस किया कि समाज की जड़ता और शोषण का कारण मध्यवर्गीय समाज की संवेदनहीनता, कुण्ठाओं और अर्थनीतियों की विषमता का परिणाम है। प्रसिद्ध उपन्यास 'गबन' (1931) में इसका सफल चित्रण देखने को मिलता है।

डॉ० त्रिभुवन सिंह के शब्दों में :- ''प्रेमचंद हिन्दी-साहित्य के सर्वप्रथम उपन्यासकार कहे जा सकते हैं, जिन्होंने भारतीय जीवन की वास्तविकता को उसके निकट से झाँककर देखने का प्रयत्न किया और उनका देखा हुआ दीन-दुखी, दुर्बल, प्राचीन रूढ़ियों एवं परंपराओं से जर्जरित तथा नवयुग जन-जागरण से अपरिचित समाज ही भारत का वास्तविक समाज था।''

(सत्येन्द्र 1976, 104)

'निर्मला' की कथा असमान तथा असमय विवाह से संबंधित है। ढ़लती आयु में युवा स्त्री से विवाह का दुष्परिणाम इस उपन्यास में वर्णित है। वहीं 'गबन' का विषय पत्नी की आभूषण-प्रियता, इसकी पूर्ति के लिए पति द्वारा सरकारी धनराशि का दुष्प्रयोग और फिर घटनाओं के परस्पर संबंध का क्रम है। 'जालपा' के बुद्धि-कौशल से रमानाथ की मुक्ति तथा उसका अभूतपूर्व त्याग, 'रतन' की चारित्रिक गरिमा इत्यादि इस कृति के कथा तत्त्व का निर्माण करते हैं। सामाजिक क्षेत्र में नारी पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध भी प्रेमचंद ने आवाज बुलंद की। 'निर्मला' में अनमेल विवाह पर करारा आघात किया गया है। 'गबन' और 'निर्मला' के माध्यम से भी उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से विधवाओं की करुण

दशा और उसके दुष्परिणाम के रूप में होने वाली त्रासदी से भी समाज को सावधान किया। वेश्या-प्रथा का संबंध समाज में नारी की हीन स्थिति से है, वेश्या भी अन्य नारियों के समान प्रेम, त्याग और सेवा के गुणों से विभूषित हो सकती है, इसे गबन की 'जोहरा' प्रमाणित करती है। अत: मुंशी प्रेमचंद की लगभग हर कृति में कहीं-न-कहीं नारी समाज में अपने अस्तित्व, रक्षा व स्वतंत्रता को पाने का संघर्ष कर रही है। इस समाज को बदलने की प्रेमचंद ने सफल कोशिश की। उनकी कहानियाँ, बहुचर्चित उपन्यास समाज की समस्याओं का दिग्दर्शन कराते हैं एवं साथ ही उनका निवारण भी सुझाते हैं।

उद्देश्य

(क) सामान्य:

- इस परियोजना कार्य के द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या प्रेमचंद आज की पीढ़ी में लोकप्रिय हैं?
- प्रश्नावली के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्रेमचंद की कृतियों में प्रस्तुत नारी-समस्या का समाधान क्या आज भी प्रासंगिक है?

(ख) विशिष्ट:

- हिन्दी साहित्य के पाठक वर्ग की रूचि व विचार को जानना तथा उनके उत्तर के आधार पर साहित्य की प्रासंगिकता और उसके संदर्भ में सामाजिक सोच को सकारात्मक दिशा में विकसित करना।

<u>अध्ययन-पद्धति</u>:-

- प्राथमिक पद्धति:- प्रश्नावली तथा साक्षात्कार प्रणाली पद्धति से जो तथ्य उभरे उनका संकलन किया गया।
- सहायक पद्धति:- सहायक पद्धति के अंतर्गत पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और इंटरनेट का प्रयोग किया गया है।

इस परियोजना के विषय का सर्वेक्षण पटना वीमेंस कॉलेज, जे०डी० वीमेंस कॉलेज, मगध महिला कॉलेज, पटना कॉलेज, राजकीय महिला महाविद्यालय, वाणिज्य महाविद्यालय कीछात्राओंऔरगृहिणियोंकोकेन्द्रमेंरखकरकियागया है। उत्तरदाताओं के विचार को प्रदर्शित कर ग्राफ द्वारा दिखाया गया है।

प्रश्न 1. क्या प्रेमचंद आज के पाठक-समुदाय में लोकप्रिय हैं?

कुल अंक	हाँ	ना	पता नहीं	कुल %		हाँ	ना	पता नहीं
50	48	2	0	100%	96%	4%		0%

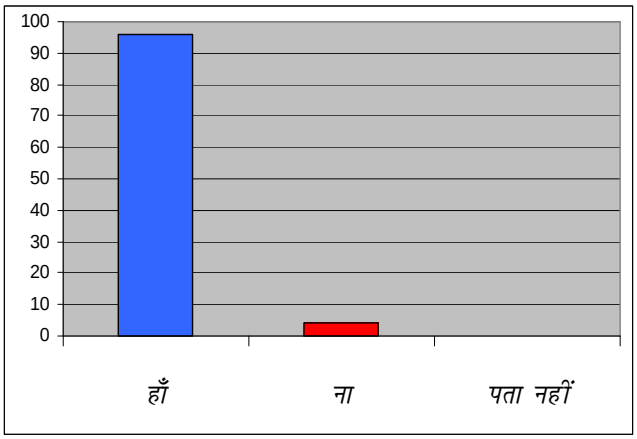

निष्कर्षत:100% विद्यार्थियोंमेंसे96% विद्यार्थियोंने माना है कि प्रेमचंद आज भी पाठक-समुदाय में अत्यंत लोकप्रिय हैं।

प्रश्न 2. क्या 'निर्मला' और 'गबन' अनेक सामाजिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम हैं?

कुल अंक	हाँ	ना	पता नहीं	कुल %		हाँ	ना	पता नहीं
50	40	5	5	100%	80%	10%		10%

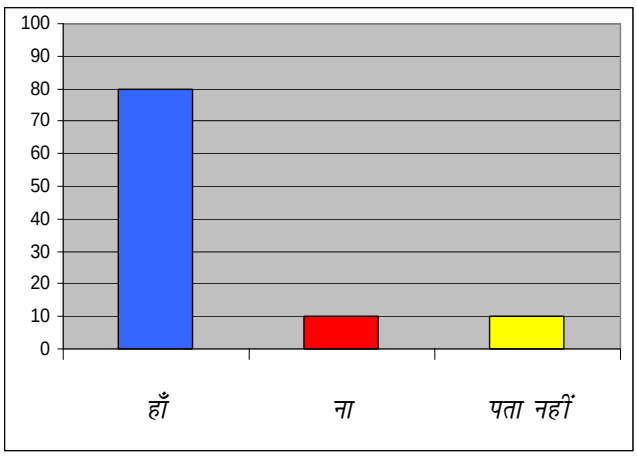

निष्कर्षत:100% विद्यार्थियोंमेंसे80% विद्यार्थियोंका मानना है कि प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास 'निर्मला' और 'गबन' समाज की अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम हैं।

प्रश्न3.क्याप्रेमचंदकीकृतियाँसमाजकीदशा–व–दिशा प्रस्तुत करती हैं?

कुल अंक	हाँ	ना	पता नहीं	कुल%		हाँ	ना	पता नहीं
50	37	12	1	100%	74%	24%		02%

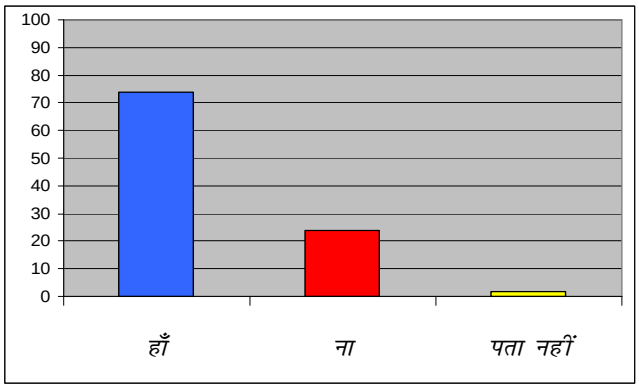

निष्कर्षत:100% विद्यार्थियोंमेंसे74% विद्यार्थियोंने स्वीकार किया है कि 'हाँ' प्रेमचंद की कृतियाँ समाज की दशा–व–दिशा प्रस्तुत करने में सक्षम हैं।

प्रश्न4.क्याप्रेमचंदकेउपन्यासनारीअस्मिताको सबल आधार देने में सक्षम हैं?

कुल अंक	हाँ	ना	पता नहीं	कुल%		हाँ	ना	पता नहीं
50	30	14	6	100%	60%	28%		12%

निष्कर्षत:करवाएगयेसर्वेक्षणकेअनुसार100% विद्यार्थियोंमेंसे60% विद्यार्थियोंनेस्वीकाराहैकिप्रेमचंद के उपन्यास नारी–अस्मिता को सबल आधार देने में पूर्णत: सक्षम हैं।

प्रश्न 5. क्या 'गबन' की जालपा भारत का उगता हुआ नारीत्व है?

कुल अंक	हाँ	ना	पता नहीं	कुल%		हाँ	ना	पता नहीं
50	28	12	10	100%	56%	24%		20%

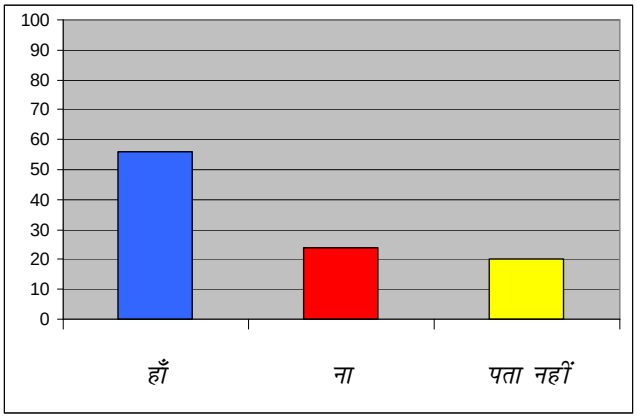

निष्कर्षत:100% विद्यार्थियोंमेंसे56% विद्यार्थियोंने जालपाकोभारतकाउगताहुआनारीत्वमाना,24% नेइसे नहींमानाऔर20% कोइसकीजानकारीनहींहै।

प्रश्न 6. क्या प्रेमचंद को राष्ट्र–लेखक माना जा सकता

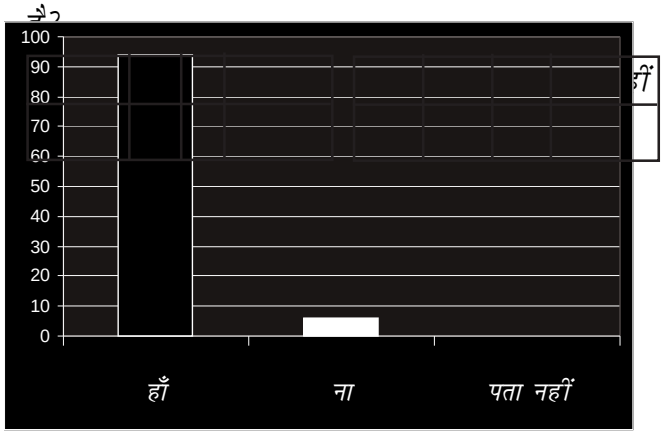

निष्कर्षत:करवायेगयेसर्वेक्षणमें100% विद्यार्थियोंमें से6% विद्यार्थियोंनेप्रेमचंदकोराष्ट्रलेखकनहींमाना लेकिन94% विद्यार्थीइससेसहमतहैं।

प्रश्न 7. प्रेमचंद साहित्य संबंधी ज्ञानार्जन के स्रोतः-

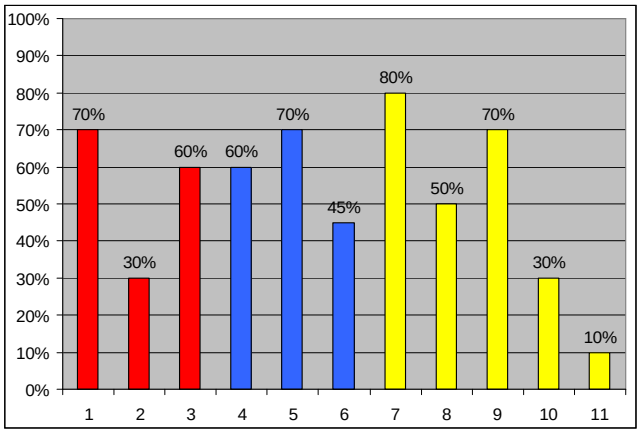

प्रिंटमीडिया

1. अखबार
2. पत्र-पत्रिका
3. पुस्तकालय

इलेक्ट्रानिकमीडिया

4. रेडियो
5. दूरदर्शन
6. इंटरनेट

निजी/व्यक्तिगत

7. वर्ग अध्याय
8. मित्र-मंडली
9. स्वाध्याय
10. सेमिनार/कार्यशाला
11. भ्रमण/प्रदर्शनी

प्रस्तुत ग्राफ में हमने दृश्य माध्यम, श्रव्य माध्यम, मुद्रित माध्यम के स्रोतों के योगदान को प्रदर्शित किया है। उन तीनों माध्यमों से प्रेमचंद के बारे में निरंतर जानकारियाँ हासिल हो रही हैं। जिससे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि आज भी युवा पाठक वर्ग में प्रेमचंद की लोकप्रियता बनी हुई है। रेडियो, इंटरनेट, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाएँ, अखबार इत्यादि प्रेमचंद की अपार लोकप्रियता के परिचायक हैं।

निष्कर्षः-

प्रेमचंद ने भारतीय समाज में क्रांति लाने के लिए अपनी लेखनी से आजीवन अथक प्रयास किया। उनसे पहले और उनके बाद भी हिंदी-साहित्य में ऐसे लेखक कम ही मिलेंगे, जिन्होंने समाज की सभी समस्याओं का गहन अध्ययन कर समाज-व्यवस्था के आमूल परिवर्तन के लिए इतनी प्रेरणा प्रदान की हो।

नर और नारी केवल सृष्टि ही नहीं साहित्य में भी समान महत्त्व के अधिकारी हैं। ये जीवनरूपी रथ के दो पहिये हैं किन्तु त्रासदी तो यह है कि नारी जीवन के लिए जितनी महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही जीवन में उपेक्षित भी। 'काव्येर उपेक्षिता' को जीवन ही नहीं साहित्य की मुख्य धारा में प्रतिष्ठित करना प्रेमचंद की सर्वोच्च प्राथमिकता थी। उनके उपन्यास 'निर्मला' का नामकरण नायिका के नाम पर होना प्रेमचंद की इसी दृष्टि का स्पष्ट परिचायक है। आज नारी-सशक्तिकरण का जो सार्थक दौर दिखाई पड़ रहा है, उसका श्रेय प्रेमचंद जैसे लेखकों को जाता है, जिन्होंने अपना खून-पसीना दिया और नारी के हक के लिए आवाज उठायी। अतएव यह कहना सर्वथा उचित है कि हिन्दी-साहित्य में प्रेमचंद सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे।

प्रेमचंद के नारी पात्रों के समक्ष जब भी कोई कठिन परिस्थिति उत्पन्न होती है, तो वे उन्हें केवल सहती ही नहीं हैं, प्रत्युत उससे जूझती हैं, संघर्ष करती हैं और उस पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करती हैं। इन स्त्रियों में प्रतिकूल स्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने की अद्‌भुत क्षमता है। 'गबन' की नारी-पात्र जालपा ऐसी ही है।

'निर्मला' उपन्यास में मुंशी प्रेमचंद ने बेमेल विवाह तथा पुरूषों की शंकालु मानसिकता के मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया है। जैसा कि हम जानते हैं कि निर्मला का विवाह अल्पायु में (14-15 वर्ष) अधेड़ तोताराम से कर दिया गया। निर्मला कभी हृदय से मुंशी तोताराम को अपना पति स्वीकार नहीं कर पायी। निर्मला भावना की भूखी थी तो तोताराम रूप और लावण्य का। उनके विचार तथा भावना में जमीन-आसमान का अंतर था। मुंशी तोताराम के पुत्र मंसाराम के प्रति निर्मला का मातृत्वात्सल्य मुंशीजी द्वारा कुत्सित संकीर्ण दृष्टि से देखने पर अपराध सदृश था। उनकी संकीर्ण मानसिकता(Inferiority complex जोउम्रकेअंतरालकी वजह से थी) ने उसकी गृहस्थी को तहस-नहस कर डाला। इसका अहसास उन्हें अत्यंत विलंब से होता है, जब वो जीवन की बाजी हार चुके होते हैं।

उपन्यास का उपसंहार भी प्रेमचंद ने बहुत ही मार्मिक किया है। निर्मला का शव जब दाह-संस्कार के लिए बाहर निकाला जाता है तब बकुचा लटकाये हुए बूढ़े थके हारे नि:शब्द मुंशी तोताराम का आकर खड़ा हो जाना उनके गहन पश्चात्ताप को दर्शाता है। निर्मला के शव के आगे उनकी बेबस, लाचार सी मुद्रा मानो गुहार करती है कि उन्हें अपने कर्मों पर पछतावा है। मनोविज्ञान की भाषा में इसे अपराध -बोध(Guilt consciousness) कहतेहैं।उपन्यास-सम्राट् मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक मनोविज्ञान का बहुत ही सार्थक शब्द-बिंब देखने को मिलता है।

रमानाथ के अध:पतन का कारण जालपा के सहज आभूषण-प्रेम को माना जाता है। लेकिन अपनी अधोगति के लिए रमानाथ भी कम दोषी नहीं है। उसकी आडंबर-प्रियता, लिप्सा, विलासोन्मुख तथा 'आमदनी अठन्नी खर्चा रुपया' की प्रवृति ही उसके पतन के लिए जिम्मेदार है। अधिकांश समीक्षकों की अवधारणा जालपा के आभूषण-प्रेम को ही रमानाथ की दुर्गति का मुख्य कारण मानती है। किंतु हम सबने अपने शोध के दौरान पाया कि यह एकांगी एवं एकपक्षीय तर्क जालपा सदृश्य स्त्रियों के साथ न्याय नहीं कर सकता। जालपा भारतीय नारी-समाज का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय समाज की यह अवधारणा प्रसिद्ध है कि 'सोना सुख का श्रृंगार और दु:ख का आधार' होता है। किंतु स्त्रियों के लिए जो बहुमूल्य गहनें उसके सुख का श्रृंगार बनते हैं, वे विपत्ति पड़ने पर त्याग की वस्तु में भी परिणत हो जाते हैं। आभूषण-प्रेमी समझी जाने वाली स्त्रियाँ अपने उन्हीं प्राणप्रिय गहनों को अपने परिवार की मंगल कामना हेतु सहजतापूर्वक त्याग देती हैं। अत: यह कहना सर्वथा अन्याय है कि स्त्री का आभूषण-प्रेम उसके परिवार के अधोगति का कारण बनता है। विचारणीय है कि भारतीय नारी को प्रखरता तो विरासत में मिली है, किंतु मुखरता का तेज उन्हें आधुनिक परिवेश ने दिया है। वे अपनी जिम्मेदारियों व कर्त्तव्यों के लिए समाज के प्रति मुखर हो रही है, समाज की जवाबदेही भी तय कर रही हैं, अत: समय के बदलते परिदृश्य में जालपा व निर्मला सदृश नारी की भूमिका व उनके कर्त्तव्यबोध पर पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है। प्रेमचंद की रचनाएँ शोषित व दमित नारी को क्रांति का नया अध्याय एवं नारी-सशक्तिकरण का नया इतिहास रचने की प्रेरणा देती है।

प्रेमचंद की लोकप्रियता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि प्रेमचंद की रचनाओं के शीर्षकों का प्रयोग प्रिंट-मीडिया अपने समाचार के सफल संप्रेषण के लिए आज भी करता है-

''जीवंत हो उठी पंच-परमेश्वर की कहानी'' दैनिक हिन्दुस्तान, (पृष्ठ संख्या-15, पटना, गुरुवार, 08 सितम्बर, 2011)

युवा-पीढ़ी देश का भविष्य होती है और अपने शोध के दौरान हमने पाया कि तकनीकी क्रांति के इस दौर में प्रेमचंद फेसबुक पर युवाओं की पसंद हैं। देश की भावी पीढ़ी के बीच प्रेमचंद की लोकप्रियता इस बात का सशक्त प्रमाण है कि प्रेमचंद जैसा साहित्यकार सदियों में एक बार पैदा होता है और कालजयी होता है।

<u>संदर्भ-स्रोत</u>

सत्येन्द (1976). प्रेमचंद, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लि०, जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110051 ।

सत्यकाम (2004). प्रेमचंद की कहानियाँ (पुनरावलोकन) अनुपम प्रकाशन, पटना- 800004 ।

तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद (2005). प्रेमचंद, प्रकाशन संस्थान, 471/21 दयानन्द मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002।

वाजपेयी, नंददुलारे, प्रेमचंद एक साहित्यिक विवेचन, प्रा० लि०, 1-बी० नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002।

शर्मा, रामविलास (1993). प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, 1-बी०, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 ।

मिश्र, उमाकान्त (2005). कथा सम्राट प्रेमचंद, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार ।

मदनगोपाल (1965). कलम का मजदूर प्रेमचंद, राजकमल प्रकाशन ।

कोहली, नरेन्द्र (1991). प्रेमचंद, वाणी प्रकाशन 4697/5, 21-ए अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-2, 1991 ।

ऋषि, उषा (1974). प्रेमचंद और उनके उपन्यास, मूल प्रकाशक पृथ्वीराज पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्र० संस्करण ।

सिंह, नथन (1982). प्रेमचंद मूल्यांकन और मूल्यांकन, विभूति प्रकाशन के-14, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032, प्र० संस्करण ।

गुप्त, विजय (1980). प्रेमचंद और प्रगतिशील लेखन (प्रथम संस्करण), एकमात्र-वितरक चित्रलेखा प्रकाशन, 147 सोहबतिया बाग, इलाहाबाद-6 ।

रस्तोगी, शैल (1977). हिन्दी उपन्यासों में नारी (प्रथम संस्करण), विभू प्रकाशन, साहिबाबाद, 201005 ।

प्रेमचंद (2011). कुछ विचार, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-1

Websites:

www.hindkunj.com/2010/01/premchandnovel.

pustak.org/home.php? bookid.15/10/11

hi.wikipedia.org/wiki/*प्रेमचंद*15/10/10